'जैन्डर' का बवन्डर

अरे! यह क्या है?

कमला भसीन

'जैन्डर' एक ऐसी सोच है जो समाज में लिंग-भेद (मर्द-औरत) का विरोध करती है और एक ऐसे समाज की कल्पना करती है जिसमें काम, गुण जिम्मेदारियां, व्यवहार और हुनर किसी लिंग, जाति, रंग और वर्ग के आधार पर थोपे न जाएं।

पता नहीं आप के कानों तक 'जैन्डर' शब्द अभी तक पहुंचा है कि नहीं पर पिछले आठ दस बरसों से 'जैन्डर' शब्द का बहुत बोलबाला है। यह शब्द हर तरफ़ छा सा गया है। विकास का काम कर रहे बहुत सारे लोग चाहे ग़ैर सरकारी हों या सरकारी, विदेशी हों या देशी, औरत हों या मर्द, इस शब्द का जोर-शोर से इस्तेमाल कर रहे हैं। पिछले दस बरसों में अनगिनत कान्फ्रेंस, वर्कशाप, ट्रेनिंग हुई हैं इसी 'जैन्डर' पर।

इस जबरदस्त प्रचलन के बावजूद बहुत ही कम लोग 'जैन्डर' की सीधी-सीधी परिभाषा दे पाते हैं। मेरा अपना तजुर्बा यह है कि बहुत ही कम लोग इस शब्द का ठीक इस्तेमाल करते हैं और इसमें उनका अपना कोई दोष शायद नहीं है क्योंकि उन बेचारों को किसी ने ठीक से यह शब्द समझाया ही नहीं है। उन पर तो मानो यह शब्द आसमान से बरसा या टपका है और फिर "जाकी रही भावना जैसी, 'जैन्डर' की समझ बनाई वैसी।" वैसे 'जैन्डर' शब्द पहले पहल तो हम सब ने व्याकरण में पढ़ा था। 'जैन्डर' यानि लिंग होता हैं—मेल जैन्डर, फ़ीमेल जैन्डर, न्यूटर जैन्डर यानि पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग, लेकिन आज 'जैन्डर' शब्द का प्रयोग बिल्कुल अलग तरीक़े से होता है। इस शब्द का प्रयोग शुरू किया गया समाज में औरत और मर्द के फ़र्क को समझने के लिए, यह समझाने के लिए कि औरत मर्द के बीच जो ऊंच-नीच के रिश्ते बन गए हैं वे रिश्ते प्राकृतिक या कुदरती नहीं हैं, उन्हें ऊपर वाले या वाली यानि किसी भगवान या देवी ने नहीं बनाया है। बहुत से लोग यह मानते हैं कि अपने शरीर की बनावट की वजह से औरत कमज़ोर है-मर्द ताक़तवर है, और कमतर है, मर्द बेहतर है यानि शरीर ही औरत मर्द की क़िस्मत है। एक बार औरत या मर्द का शरीर पा लिया तो फिर कुछ नहीं हो सकता। 'जैन्डर' शब्द का इस्तेमाल इस सोच को बदलने के लिए ही शुरु किया गया।

अंग्रेज़ी में सेक्स और 'जैन्डर' दो अलग अलग शब्द हैं। सेक्स है शारीरिक। बच्चा पैदा होता है

तो वह नर या मादा होता है। उसके शरीर को देखकर पता चल जाता है कि वह नर है या मादा। जिसके लिंग व अन्डग्रन्थियां हों वह लड़का, जिसके योनि हो वह लड़की। हर लड़की बड़ी होकर औरत बनती है, उसके शरीर में बच्चेदानी व स्तन होते हैं क्योंकि उसके शरीर में बच्चा बनता और बढ़ता है। शरीर के इस फ़र्क के अलावा लड़के और लड़की में कोई फ़र्क नहीं है और जिस्म की बनावट में भी समानता कहीं ज़्यादा है, फ़र्क बहुत कम। यौनिक और प्रजनन के अंगों के अलावा सब अंग एक से हैं।

सेक्स और 'जैन्डर': दो अलग चीज़ें

इस शारीरिक या जिस्मानी बनावट को प्राकृतिक लिंग (SEX) कहते हैं। अपने शरीर की बनावट की वजह से लड़के का लिंग पुरुष है और लड़की का स्त्री।

यह प्राकृतिक लिंग भेद प्रकृति ने बनाया है और यह भेद हर परिवार, समाज और देश में एक सा होता है—यानि शारीरिक रूप से लड़का हर जगह लड़का है और लड़की हर जगह लड़की।

शारीरिक भेद के अलावा जो लड़के लड़की में भेद बना दिए जाते हैं—जैसे उनके कपड़े, व्यवहार, शिक्षा, उनकी ओर समाज का रवैया वे सब सामाजिक भेद है प्राकृतिक नहीं। तभी तो ये भेद हर परिवार और समाज में एक जैसे नहीं हैं। जैसा हम देखते है किसी लड़की के बाल लम्बे हो सकते हैं किसी के छोटे। कुछ परिवारों में लड़के घर में काम करते हैं, कुछ में नहीं करते, कोई औरत घर पर ही काम करती है कोई हाट-बाज़ार करती है-आदि आदि।

'जैन्डर' है सामाजिक लिंग

लड़के-लड़की, औरत-मर्द से जुड़ी इन सामाजिक मान्यताओं को 'जैन्डर' या सामाजिक लिंग कहते हैं। सामाजिक लिंग या औरत और मर्द की परिभाषा समाज बनाते हैं। समाज ऐसे नियम बनाते हैं जैसे लड़की घर या जनाने में रहेगी, लड़का बाहर जायेगा। या लड़की को खाने और खेलने को कम मिलेगा, लड़के को ज़्यादा। लड़के को अच्छे स्कूल भेजा जाएगा ताकि वह बड़ा हो कर घर का धन्धा सम्भाल सके या अच्छी नौकरी पा सके। लड़की की पढ़ाई पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाएगा।

ये सब सामाजिक लिंग भेद प्रकृति ने नहीं बनाए। प्रकृति तो लड़की और लड़का पैदा करती है, समाज उन्हें मर्द और औरत में बदल देता है। समाज की परिभाषाओं की वजह से लड़के और

लड़की के भेद बढ़ते चले जाते हैं और ऐसा लगने लगता है मानो लड़के और लड़की, औरत और मर्द की दुनिया ही अलग है।

भेदभाव समाज ने बनाए हैं

सामाजिक लिंग भेद ही लड़के-लड़की, औरत-मर्द में ग़ैर-बराबरी पैदा करता है। समाज (या हम सब जो समाज का हिस्सा है) कहता है पुरुष उत्तम या बेहतर है, स्त्री कमतर है, जो काम पुरुष करते हैं उनकी मज़दूरी ज़्यादा है, औरत के काम की कम या बिल्कुल नहीं। मर्द सत्तावान है, औरत सत्ताहीन है।

प्रकृति ग़ैर-बराबरी की बात नहीं करती। वह सिर्फ़ प्रजनन के लिए औरत और मर्द को अलग अंग देती है, उससे ज़्यादा कुछ नहीं। भेद-भाव, ऊंच-नीच, अलग तौर तरीक़े इन्सानों या समाज, यानि हम सब बनाते हैं अमीर-ग़रीब, ब्राह्मण-शूद्र, गोरे-काले, औरत-मर्द का फ़र्क प्रकृति ने नहीं, समाज ने बनाया है।

सच तो यह है कि हर इन्सान में स्त्री ओर पुरुष दोनों होते हैं, पर समाज लड़की के अन्दर छुपे पुरुषत्व को और लड़के के अन्दर छुपे स्त्रीत्व को उभरने नहीं देता। समाज स्त्री-पुरुष की समानताओं को उभारने की जगह उन के अन्तर पर ज़्यादा ज़ोर देता है और इसी वजह से स्त्री-पुरुष में फ़र्क बढ़ता रहा है, उनके रास्ते अलग-अलग होते गए हैं और असमानता की वजह से उनमें तनाव और द्वन्द भी बढ़ता गया है।

पितृसत्ता सामाजिक है: कुदरती नहीं

ज़्यादातर देशों में सामाजिक लिंग भेद पितृसत्तात्मक है—यानि वह पुरुष की सत्ता दर्शाता है और मर्दों

को अहमियत देता है। सामाजिक-लिंग भेद के औरतों के ख़िलाफ़ होने की वजह से लड़कियों पर अनेकों बन्धन होते हैं, उनके ख़िलाफ़ पक्षपात होता है, उन पर हिंसा होती है। इसी वजह से लड़कियां लड़कों की तरह आगे नहीं बढ़ पातीं, अपना हुनर नहीं निखार पातीं। एक ही घर में लड़के फलते-फूलते और लड़कियां कुम्हलाती नज़र आती हैं। उस लिंग भेद का बुरा असर सिर्फ़ लड़कियों पर ही नहीं उनके परिवार, समाज और पूरे देश पर पड़ता है। लड़कों पर भी कुछ खास काम, गुण और ज़िम्मेदारियां थोपी जाती हैं।

सामाजिक-लिंग या 'जैन्डर' इन्सानों का बनाया है। हम सब अगर चाहें तो उसे बदल सकते हैं, लड़के-लड़की, स्त्री-पुरुष की नई परिभाषाएं दे सकते हैं। हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जहां लड़की होने का मतलब कमतर, कमज़ोर होना नहीं है और लड़का होने का अर्थ क्रूर, हिंसात्मक होना नहीं है।

(क्रमशः पृष्ठ 13 पर)

'जैन्डर' का बवन्डर

(पृष्ठ 5 का शेष)

सच तो यह है कि हर लड़की और लड़का जो चाहे पहन सकता है, खेल सकता है, पढ़ सकता है, बन सकता है। लड़की होने से ही घर का काम करना, औरों की सेवा करना नहीं आ जाता। लड़का पैदा होने से ही निर्भयता, तेज़ दिमाग, ताक़त, आदि नहीं आ जाते। ये सब काम और गुण सीखने सिखाने से आते हैं। जिसकी जैसी परवरिश होगी वो वैसी बन सकती है।

हम चाहें तो ऐसा समाज बना सकते हैं जिनमें काम, गुण, ज़िम्मेदारियां, व्यवहार और हुनर किसी लिंग, जाति, रंग और वर्ग के आधार पर थोपे न जाएं। सब अपनी मर्ज़ी और स्वभाव के मुताबिक काम कर सकें, हुनर सीख सकें और व्यवहार कर सकें।

अब आया समझ में कि 'जैन्डर' कोई बवन्डर नहीं है। यह एक आसान सी और फ़ायदेमन्द अवधारणा है। इस अवधारणा की मदद से हम बहुत कुछ सीख और समझ सकते हैं और अगर चाहें तो बहुत कुछ बदल भी सकते हैं। □